www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म परक शिक्षा के मूलभूत आधार

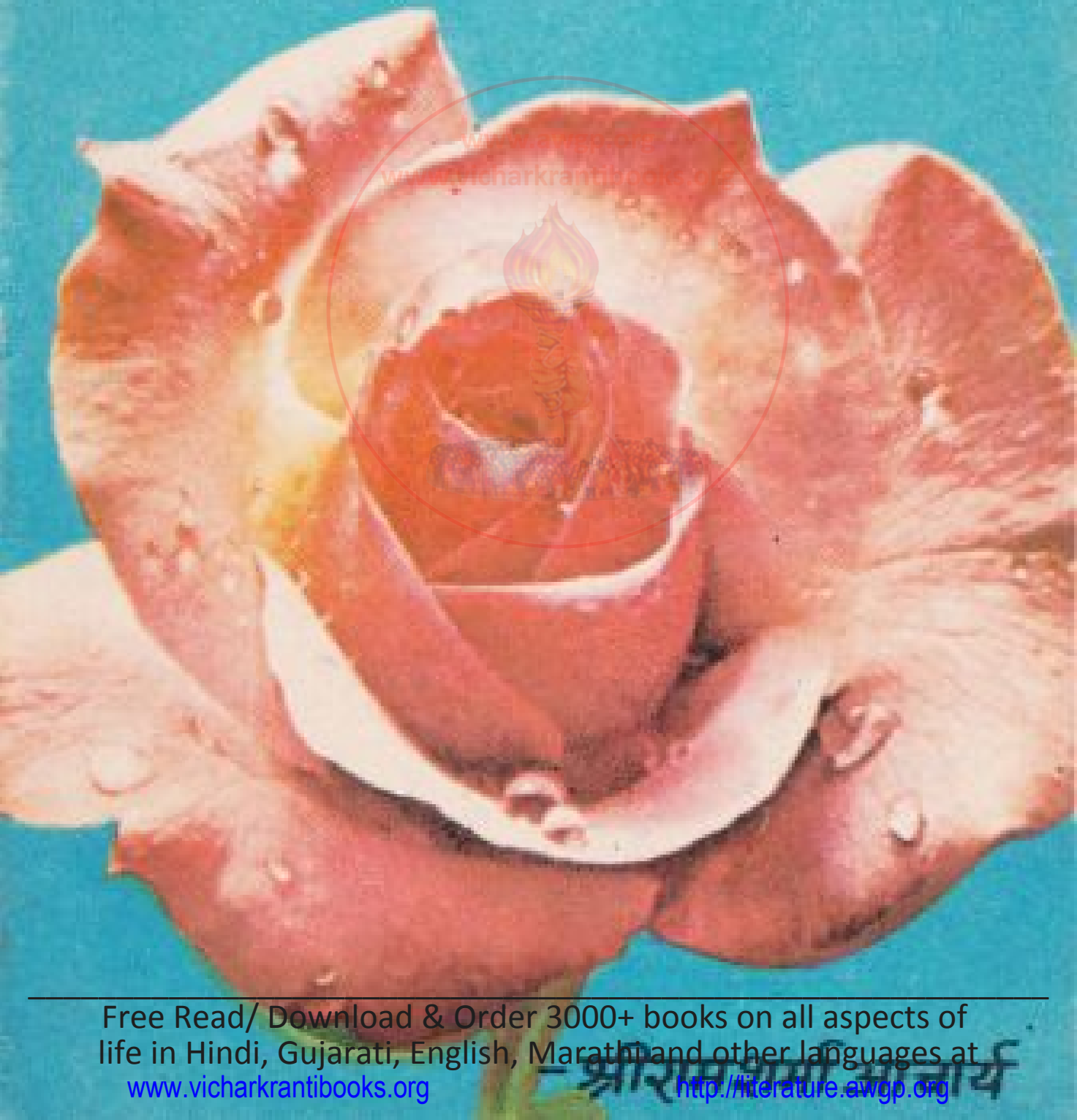

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्र०—२४

प्रकाशक:

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

लेखक:

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक:

युग निर्माण प्रेस

गायत्री तपोभूमि मथुरा

१९८२

मूल्य:

तीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्मपरक शिक्षा के मूलभूत आधार

शिक्षा की परिभाषा करते हुए विचारकों ने उसे कितने ही अर्थों में परिभाषित किया है। पर भारतीय संस्कृति की शिक्षा सम्बन्धी मान्यताओं को थोड़े से शब्दों में सटीक अभिव्यक्ति देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा है—"शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं को पूर्ण विकसित करना है।" इन शब्दों में शिक्षा की जो व्याख्या हो जाती है वह अपने आप में अनुपम और अद्वितीय है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य और सार्थकता यही है कि परमात्मा के युवराज मनुष्य को उसकी क्षमताओं से साक्षात् करादे और उन्हें विकसित भी कर दे।

सभ्यता का जो विकास अब तक हो सका है उसमें शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसे पारिवारिक और समाजिक उपलब्धियों के संचरण का साधन कहा गया है। अर्थात् हमारे पूर्वज और पहले के समाज ने जो कुछ अर्जित किया वह इस सभ्यता द्वारा हमें प्राप्त हुआ। हम उसमें से जो कुछ नया जोड़ते हैं वह अगली पीढ़ी को दे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जायें। मनुष्य सभ्यता के आदिमकाल से लेकर अब तक जो विकास हुआ, मनुष्य ने जो अर्जित किया है, सभ्यता ने जो विकास किया है वह संचरित हुआ वर्तमान पीढ़ी तक, नई पीढ़ी ने उसमें नई उपलब्धियाँ जोड़कर उत्तराधिकार में दूसरी पीढ़ी को दीं तथा उसने उससे अगली वाली पीढ़ी को। इस प्रकार मानवी सभ्यता में निरन्तर कुछ नया जुड़ता गया और उस समेत पूर्वार्जित उत्तराधिकार में अगली पीढ़ी को मिलता रहा।

बेशक इस प्रकार मनुष्य का ज्ञान भण्डार काफी विकसित हुआ और आज इतना विकसित हो चुका है कि किसी एक व्यक्ति को समग्र रूप में दे पाना कठिन है। कठिन इसलिए कि सभी विषयों में पूर्ण ज्ञाता कोई एक व्यक्ति नहीं हो सकता और हो भी जाय तो वह हस्तान्तरित नहीं कर सकता। अतः धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, शिल्प, विज्ञान की अनेकानेक धारायें बटती गईं और अब उनकी संख्या इतनी अधिक हो चुकी है कि सभी लोगों के लिए सभी विषयों के नाम याद रख पाना भी कठिन है। अकेले रसायन शास्त्र की ही सौ से अधिक शाखायें हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुनिया भर में पाँचसौ से अधिक धर्म-सम्प्रदाय चलते हैं। अकेले हिन्दू धर्म की तीस से भी अधिक शाखायें हैं। कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य जाति के पास उपलब्ध ज्ञान भण्डार इतना विस्तृत है कि वह थोड़े से लोगों के हाथ में नहीं रह सकता। अतः अलग-अलग विषयों के अलग-अलग ज्ञाता हैं। यह कोई जरूरी नहीं है कि रसायन शास्त्र की किसी शाखा का प्रकाण्ड पण्डित जीव विज्ञान में किसी जन्तु के जीवन चक्र को भी समझे, जो कि जीव शास्त्र का प्रारम्भिक छात्र भी जानता हो।

अतः शिक्षा का अर्थ सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान तो नहीं है पर इतना अवश्य है कि व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों के साथ-साथ कदम मिलाकर चल सके। इसलिए सभ्यता के विकास के साथ-थाथ शिक्षा व्यक्ति को अपने समाज के साथ जीना भी सिखाती है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता जा रहा है वैसे-वैसे शिक्षा की आवश्यकता भी अनिवार्यता में बदलती जाती है। एक समय था जब लोग बैलगाड़ी या घोड़ा गाड़ी में चलते थे, मोटर, रेल, विमान और चन्द्रयान जैसे साधन जब आज सुलभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गये हैं तो किसी व्यक्ति का बैलगाड़ी के युगमें ही जीना आश्चर्य का विषय हो सकता है। उस समय लोग तत्कालीन आवश्यकता के अनुसार व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध साधनों से प्राप्त कर लेते थे, वंचित रह भी जाते तो वह कोई बुरा नहीं समझा जाता था। पर आज वैसा नहीं है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अन्य लोगों और समुदायों से कटकर सीमित क्षेत्र में अधिक से अधिक घर की चहार दीवारी में ही जी सकता है। क्योंकि अब तो घर से बाहर कदम रखते ही व्यक्ति में बाहरी दुनिया को समझने की क्षमता आवश्यक हो जाती है।

और यह क्षमता केवल शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के लिए शिक्षा की आवश्यकता को मानवशिशु के माध्यम से भी समझा जाता है। जन्म लेने के बाद मनुष्य का बच्चा रोने चिल्लाने लगता है, जबकि पशुओं के बच्चे अपनी खाद्य सामग्री आप ही ढूँढ़ने लगते हैं। बच्चे को अपना आहार प्राप्त करने के लिए माँ की सहायता के लिए पुकारना पड़ता है। मानव शिशु असहाय है जबकि पशु स्वभावतः ही जन्म लेने के बाद अपना जीवन संघर्ष

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ कर देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य कमजोर और पशु अधिक समर्थ है। वरन् कारण यह है कि पशु जहाँ नैसर्गिक प्रेरणाओं से संचालित रहता है वहीं मनुष्य को अपनी नियति आप निर्धारित करने का अधिकार मिला है। जन्मजात ही पशु शावक प्रकृति दत्त प्रेरणा लिए रहता है। और उसी अनुसार मरण पर्यन्त चलता भी है। जबकि मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत अधिक जटिल, गतिवान और परिवर्तनशील रहता है। उसे औरों के माध्यम से बहुत कुछ स्वतः अर्जित करना पड़ता है प्रकृति और दूसरों का सहयोग प्राप्त करने की कला उसे जन्म से ही सिखा देती है।

दूसरों की क्षमताओं और उपलब्धियों से सीखकर स्वयं को किस प्रकार विकसित किया जाय इसका मार्ग शिक्षा ही सुझाती है। वह सहयोगापेक्षा के रूप में मनुष्य शिशु को आरम्भ से ही वह कला सिखा देती है जिसके बल पर बच्चा आगे चलकर अपनी क्षमताओं का स्वामी बन जाता हैं तथा योग्यताओं में उनको बदल देता है।

क्षमतायें योग्यताओं में तभी परिणित होती हैं जबकि

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तद्विषयक ज्ञानार्जन किया गया हो। ज्ञान या जानकारी का एक उपाय निरीक्षण और अन्वेषण तो है पर उससे कई गुना अधिक ज्ञान व्यक्ति दूसरों से सीखकर प्राप्त करता है। एक मशीन के पुर्जे खोलने, बिना किसी की सहायता से उन्हें समझने और उस कला में पारंगत होने के लिए कई जन्म भी लग सकते हैं और पूरा जीवन भी खप सकता है। पर योग्य व्यक्तियों की सहायता से उन्हें समझने उनका उपयोग सीखने की चेष्टा की जाय तो व्यक्ति कुछ ही महीनों में, वर्षों में निष्णात हो जाता है। सहयोगापेक्षा इस क्षेत्र में सर्वाधिक काम की सिद्ध होती है और प्रत्येक व्यक्ति स्वतः बहुत कम और दूसरों से विरासत के रूप में ही अधिक ज्ञान अर्जित करता है।

अपना विकास जहाँ प्रकृति की प्रेरणा है वहीं उसकी कला और क्षमताओं का योगदान में परिवर्तन समाज की देन। मनुष्य को प्रकृति की इस प्रेरणा के अनुरूप अपना विकास करने के लिए ही समग्र शिक्षणतन्त्र का ढाँचा खड़ा करना पड़ता है। शिक्षण व्यवस्था व्यक्ति और समाज की आवश्यकता का तालमेल बिठाते हुए निर्धारित की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाती है। व्यक्ति की आवश्यकता यह है कि वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता अर्जित करते हुए शारीरिक, वैयक्तिक एवं आत्मिक उन्नति करे। और समाज को जिस दिशा में अग्रसर होना है उसी प्रकार का शिक्षा ढाँचा खड़ाकर वह व्यक्ति को उस अनुरूप बनाती है अर्थात् शिक्षा का एक प्रयोजन व्यक्ति को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप संस्कारवान बनाना भी है।

ये दोनों कार्य व्यक्ति की स्वाभाविक क्षमताओं का विकास, ज्ञान और अपेक्षाओं का हस्तान्तरण, बड़ी आयु की अपेक्षा छोटी आयु में ही अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न किये जा सकते हैं। क्योंकि उस समय व्यक्ति पर न तो कोई गम्भीर दायित्व रहता है तथा उसकी मनोवृत्तियाँ भी लचीली होती हैं, जिन्हें मन चाहा मोड़ दिया जा सकता है। कुम्हार को जैसा खिलौना बनाना होता है मिट्टी में पानी डालकर उसे रोंदकर उसी प्रकार के सांचे में दबाते हैं। जैसे सिक्के ढालने होते हैं उसी प्रकार साँचे भी बनाये जाते हैं और उनमें पिघली धातु डाली जाती है। बचपन की उम्र पिघली धातु या गीली मिट्टी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की तरह ही है, जिसे मन चाहा आकार दिया जा सकता है। 'हिटलर' ने विश्व विजय का स्वप्न देखा था तो उसने जर्मन विद्यार्थियों के जातीय श्रेष्ठता और उनकी विशेष योग्यता की बात हर नागरिक के मन में भरने की ठानी। उसी अनुसार उसने वहाँ की शिक्षा पद्धति का निर्धारण किया। परतन्त्र भारत में क्लर्क बाबुओं की ही आवश्यकता थी तो लार्ड मैकाले ने इसी आधार पर शिक्षा का ढाँचा खड़ा किया। साम्यवादी देशों में अपनी प्रजा को अभीष्ट विचारों में ढालने के लिए शिक्षा पद्धत्ति को ही उसके अनुरूप बनाया गया।

शिक्षा द्वारा ज्ञान के हस्तान्तरण की बात आरम्भ में की गई है। वह शिक्षा का महत्व दर्शाने के लिए ठीक है। पर वह विशिष्ट व्यक्तियों से ही सम्भव है। सामान्य व्यक्तियों के लिए तो आरम्भ में अपनी क्षमताओं के सामान्य विकास, जीवन को सफल बनाने की कलामें पारंगतता तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने की तत्परता का ही प्रयोजन रहता है लेकिन अपने देश में सभी व्यक्तियोंके लिए शिक्षा का यह स्तर निर्धारित करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसलिए भी कठिन है कि यहाँ की अधिकांश जनसंख्या अशिक्षित है। नई पीढ़ी को शिक्षित करने के साथ-साथ उसे सम्हालने की भी जरूरत है और यह कार्य वे ही व्यक्ति अच्छी तरह संपन्न करते हैं जो स्वयं शिक्षित हों तथा शिक्षा की, सभ्यता की दौड़ में समानान्तर दौड़ने के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी अनुभव करते हों।

प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए अलग से शिक्षाक्रम निर्धारित करना चाहिए ताकि वे भी अब तक आई कमियों को दूर कर सकें। जनस्तर पर कार्यान्वित हो सके, इस तरह की व्यावहारिक शिक्षा तीन भागों में बाँटी जा सकती है। पहली अक्षर ज्ञान के साथ-साथ संसार की विभिन्न परिस्थितियों की जानकारी। उसके बाद दूसरे क्रम पर शारीरिक, आर्थिक एवं भौतिक जीवन को सरल व सफल बनाने योग्य उपयुक्त ज्ञान तथा तीसरे चरण में मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर व्यक्तिगत एवं सामाजिक गतिविधियों का बोध। इसके बाद का क्षेत्र व्यक्ति के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय कि वह चाहे तो किसी विषय में विशेष योग्यता अर्जित कर सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्न तो यह किया जाना चाहिए कि व्यक्ति अपनी भौतिक सम्पत्ति बढ़ाने की जितनी चिन्ता करता है और उसके लिए जितना प्रयत्नशील रहता है, उतना ही प्रयत्न शील अपनी ज्ञान सम्पदा बढ़ाने के लिए भी रहे। मनुष्य का वास्तविक धन तो विद्या ही है जिसे न कोई चुरा सकता है न डाकू छीन सकता है। जनस्तर पर विद्या की सम्पत्ति बढ़ाते रहने के लिए प्रोत्साहन की सुविधा रहनी चाहिए और वैसी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न की जाते रहना चाहिए।

आजकल शिक्षा के प्रति अभीष्ट रुचि का अभाव लोगों में इसलिए भी देखा जाता है कि वे पढ़-लिखकर नौकरी तलाश करने के चक्कर में वर्षों इधर से उधर भटकते रहे। लाखों छात्र प्रति वर्ष पास होते हैं और सभी की इच्छा अच्छी और ऊँची नौकरी प्राप्त करने की होती है। इन सबको कहाँ से काम मिले? कहाँसे नौकरी दी जाय? फलतः शिक्षितों की बेकारी देखकर भी सामान्य सूझ-बूझ के अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहते। इस स्थिति का सामना करने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक व्यक्ति को अपना दृष्टिकोण सुधार लेना चाहिए। शिक्षा को विशुद्ध रूप से ज्ञान संवर्धन तथा व्यक्तित्व के विकास की आवश्यकता पूरी करने के लिए प्राप्त किया जाय, न कि अच्छी, ऊँची, और आराम की नौकरी मिलने का सपना देखते हुए। आज की परिस्थितियों में शिक्षा को सीधे जीविकोपर्जन का उपाय न बनाया जाय न बनाने की सोची ही जाय।

शिक्षण व्यवस्था में भी कुछ परिवर्तन अभीष्ट हैं। जिसके अनुसार व्यक्ति अपना ज्ञान सम्वर्धन करते हुए आत्म निर्भर बनने में भी समर्थ हो सके। जीवनोपयोगी सामान्य ज्ञान को व्यक्तित्व के विकास हेतु तो अर्जित कराया जाय, निर्वाह आवश्यकता की पूर्ति को भी शिक्षण का एक आनुषंगिक पक्ष मानकर विद्यार्थी को स्वयं ही उसे सँवारने में समर्थ बनाया जाय। छोटे-मोटे उद्योग धन्धे लुहार, मिस्त्री, दर्जी, कुम्हार, रँगरेज, मोची, जुलाहा, नाई, धोबी आदि के छोटे समझे जाने वाले काम धन्धे यदि पढ़े-लिखे लोग सुथरे और सँवारे ढङ्ग से करने लगें या उन्हें करने की प्रेरणा दी जाय; तो वे ही विद्यार्थी इन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्रों में जाकर लोगों की शिक्षा सम्बन्धी भ्रामक धारणाओं को आसानी से बदल सकेंगे।

मनुष्य को छोड़कर अन्य किसी जीव को शिक्षित नहीं किया जा सकता क्योंकि निसर्ग ने जो ज्ञान शक्ति मनुष्य को दी है वह अन्य किसी प्राणी को नहीं दी। अन्य जीवों को केवल प्रशिक्षण दिया जा सकता है, जैसे सर्कसके सिंह, हाथी, घोड़ा, बन्दर, बकरे, तोता-मैना आदिको। शिक्षण और प्रशिक्षण के इस बुनियादी भेद को समझना बहुत आवश्यक है। शिक्षाका सूत्र, उसका स्रोत, उसकी झिक अंतस है वह एक संस्कार है, जो बीज रूपसे अंकुरित होवृक्ष बनता है शिक्षण अभ्यास है। यह उस पौधे की भाँति है जो पुष्प और फलोंसे रहित स्थानकी पूर्तिके लिए सजावटके किसी स्थल पर क्षणिक महत्वके लिए रोपा जाता है, यानी शिक्षा एक प्राकृतिक संस्कार है और प्रशिक्षण एक कृत्रिम वस्तु मात्र। पहले का सम्बन्ध अन्तस् से है दूसरे का बाहर से, पहला प्राकृतिक है दूसरा कृत्रिम, एक विकासशील प्राण-तत्व है तो दूसरा ह्रासोन्मुख निर्जीव पदार्थवत्। इस प्रकार प्रशिक्षण ऊपरसे जबरदस्ती थोपा हुआ ढाँचा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा ऊपर से नहीं थोपी जाती वरन् अन्तस् को जगाकर दी जाती है। पानी के हौजमें जिस प्रकार पानी ऊपर से भरा जाता है उसी प्रकार प्रशिक्षण ऊपरसे दिया जाता है। जबकि शिक्षण भरे हुए पानी की भाँति है, जो भीतरी झिर्रीसे भरता है। अंग्रेजी शब्द 'एजूकेशन' का अर्थ बड़ा महत्वपूर्ण है। उसका अर्थ है भीतरसे बाहर निकालना उसका अर्थ बाहर से भीतर डालना नहीं है, पर हम जो कुछ कर रहे हैं वह बाहरसे भीतर डालना है। इसे शिक्षा कैसे कहा जा सकता है? यह मात्र प्रशिक्षण है और यही कारण है कि जिसे हम शिक्षित होना कहते हैं और जिसे हमारे विश्वविद्यालय तक सम्मानित करते हैं, यह जीवन की व्यापक और वृहत् परीक्षा में असफल हो जाता है। ऐसा शिक्षित जन केवल रटा हुआ तोता होता है। उसमें स्वयं विचार की न तो कोई ऊर्जा होती है और न अपने जीवन को निर्देशित करने का कोई विवेक। वह पानी की लहरों पर बहते हुए लकड़ी के उस टुकड़े की भाँति होता है जिसे लहरें जहाँ ले जाती है, चला जाता है।

प्रशिक्षण का शिक्षण के रूप में इस भाँति का प्रचलित

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होना तकनीकी शिक्षाके प्रतिप्रभाव के कारण हुआ, क्योंकि तकनीकी का प्रशिक्षण ही हो सकता है, शिक्षण नहीं। हम तकनीकी ज्ञान की ओर उसके द्वारा होने वाली भौतिक समृद्धि के विरुद्ध नहीं हैं। संसारके लिए और हमारे लिए वह भी आवश्यक है। किन्तु इससे जो हमारा अनिष्ट हो रहा है उसकी बढ़ती हुई दिनों-दिन बढ़ती हुई संभावना से हमारे बुनियादी जीवन का जो आधार खोखला हो रहा है उससे अब हम अधिक समय तक अपनी आँखें मूँदकर नहीं रह सकते। अपनी अयोग्यता को छिपाकर केवल अभ्यास के बल पर हम आखिर कहाँ तक आगे बढ़ सकेंगे। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लालच में नकल का कोई भी विद्यार्थी जीवन-रूपी परीक्षा में सफल हो सकेगा यह स्पष्ट-तया असम्भव है। इस प्रकार सच्ची शिक्षाके अभावमें यह प्रशिक्षण हमारे जीवन को दरिद्र और एकांगी बना रहा है। और इसी के साथ इसके कुछ भयानक नतीजे भी निकल रहे हैं। तकनीकी ज्ञान भौतिक जगत के नियन्त्रण के लिए आवश्यक है, परन्तु जिसे सच्ची शिक्षा कहा जाता है उसके द्वारा शिक्षित न होने के कारण मनुष्य अपने पर नियन्त्रण नहीं कर पा रहा है और स्वयं पर इस नियंत्रण

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के कारण उसका पदार्थ ज्ञान एवं भौतिक वस्तुओं का आधिपत्य वैसा ही है जैसा अबोध बच्चे के हाथ में तलवार देना। पिछले दो महायुद्ध इसके प्रमाण हैं और हम आज भी उसी दिशा में बढ़ रहे हैं। हमें इन महायुद्धों से चेतावनी नहीं मिली। यदि मनुष्य व्यष्टि और समष्टि रूप से सचेत नहीं होता है तो अनियन्त्रित मनुष्य के हाथ में प्रकृति की नियन्त्रित शक्तियाँ आत्मघातक सिद्ध होंगी। इसकी चरम परिणति समस्त मानवता के अन्त में हो सकती है। अतः भौतिक वस्तुओं पर नियन्त्रण के पूर्व मनुष्य का उससे कहीं अधिक स्वयं पर नियन्त्रण होना आवश्यक है। क्योंकि शक्ति केवल संयम के हाथों में सुरक्षित रहती है असंयमी, विवेकी के शक्तिशाली होने से भस्मासुर की पुनरावृत्ति अवश्यम्भावी होगी।

जो शिक्षा मनुष्य को सृजन की शिक्षा न होकर उसके संहार का कारण बनती है उसे शिक्षा कैसे कहा जा सकता है ? शिक्षा का अर्थ ही एक सद्इच्छा, सद्भाव के प्रसार को करना है। एक ऐसे ज्ञान का विस्तार शिक्षा तत्व में निहित है जो व्यष्टि के माध्यम से समष्टि कल्याण का केन्द्र

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बने। तकनीकी ज्ञान शिक्षा का प्रधान अंग कभी नहीं होना चाहिए, वह गौण रहना चाहिए। मानवीय मूल्यों की स्थापना ही शिक्षा का केन्द्रीय तत्व है। तकनीकी ज्ञान से उपार्जित वस्तुयें जीवनयापन का साधन हो सकती हैं साध्य नहीं। साध्य तो मनुष्य स्वयं है। इस साध्य की प्राप्ति के लिए ही शिक्षा उसका एक शस्त्र है, एक साधन है। वर्तमान शिक्षा पद्धतिमें हुआ यह है कि जो साध्य है वह साधन बन गया है और जो साधन है वह साध्य। इस प्रकार साधन को साध्य के ऊपर रखना घातक सिद्ध हुआ है। आध्यात्मिक शिक्षा और भौतिक शिक्षा का यही एक भेद है। भौतिक शिक्षामें साधन, साधन रहते हैं और साध्य, साध्य। और यदि आवश्यकता पड़े एवं अन्य कोई विकल्प शेष न रहे तो सच्ची शिक्षा साधनों का परित्याग कर सकती है लेकिन साध्य का नहीं। उसकी दृष्टिमें वे हर साधन सम्यक् हैं जो जीवन के चरम साध्य की उपलब्धि में सहयोगी हैं। इसके विपरीत पड़ते ही वे व्यर्थ और त्याज्य हो जाते हैं।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा का उद्देश्य मात्र स्वावलम्बन नहीं है, न हीं केवल ज्ञान का संवर्धन। शिक्षा की समग्रता और परिपूर्णता मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में सन्निहित है। जो शिक्षा मनुष्य को स्वावलम्बी बनाये, आचरण को शुद्ध करे तथा सामाजिकता के गुणों में अभिवृद्धि करे वही सार्थक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना

गायत्रीतपोभूमि -मथुरा

Cover Printed by: Laxmi Printing Press, Mathura.

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org